

# ॥ साङ्गीत प्रह्लाद ॥

लक्ष्मणसिंह विरचित ।

जिसमें

मौल्तानिक दैत्याधिप हिरण्यकशिप्वात्मज श्रीमद्राम-
पदाब्ज सेवक देवारिकुलावतंस भक्तजनशिरोभूषण
प्रह्लादजीका पिताकीआज्ञानुसार नानाप्रकारके कष्ट
से मुक्तहोना व सर्वव्यापी श्रीरामचन्द्रका स्तम्भ में
नृसिंहरूप से प्रकट होना इत्यादिक अनन्य
भक्त के प्रेमवश श्रीमहाराज रामचन्द्र के अति
ललित उत्तम चरित्र दैशिक भाषा के
चौबोले छन्दों में वर्णित हैं ।

पहिलीबार

कानपुर

मुंशीभगवानदयाल एजंट के प्रबन्ध से

मुंशीनवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापख़ाने में छपा

फ़रवरी सन् १६१६ ई० ।

* श्रीगणेशायनमः *

# अथ सांगीतप्रह्लाद लक्ष्मणकृत ॥

दोहा ॥

पण्डित वेदविचारते सो देवी के दरबार ।
नगरकोट वैकुण्ठ में बैठी आसन मार ॥

माताजी बैठी आसनमार तुही मेरी ज्वालारानी । हरियल पीपलद्वार तेरे नौकर अगवानी ॥ माताजी ब्रह्माबाँचैं वेद पढ़ैं पण्डितसुरज्ञानी । लक्ष्मणकहै बनाय कलातेरी जग में जानी १ ॥

दोहा मातुसरस्वति तू बड़ी गणपति को कर याद ।
एकदिना खेलनचले वे लड़का प्रह्लाद ॥

प्रभुजी वे लड़का प्रह्लाद कुँवर कुम्हरी घरआये । तहाँ बैठीही मंजारि देखि मनमें मुसकाये ॥ प्यारेजी लीन्ही कुम्हरी बोलि वचन हँसके समझाये । क्यों बैठी मंजारि भेद हमने नहिं पाये २ ॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लाद से ।

दोहा हाथजोर अर्जी करै बोली वचन सम्हार ।
याके सुत अग्नी चढ़े राम बचावनहार ॥

प्यारेजी राम बचावनहार रटैं जाको लख चौरासी । राजा रङ्क फकीर रटैं योगी संन्यासी ॥ प्यारेजी वा बिन दूजा कौन नाम जिनका अविनासी । सुमिरण से दुख जाय काटदइ यमकी फाँसी ॥ ३ ॥

प्रह्लाद का वचन कुम्हारी से ।

दोहा–चुपकी होकर तुमरहो, राम नाम ना लेय ।

जो सुनपावैंगे पिता जलावतन करदेंय ॥
कुम्हारीजी जलावतन करदेंय आज तोकूँ खैंच मँगावै। ऐंचभरे भुसखाल तुरत जो अग्नि लगावै॥ कुम्हारीरी इकछत जिनका राज देशमें हुक्म चलावै। जाको ले तू नाम वही कहु कौन कहावै ४॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लादजी से।

दोहा पैदाकर पालन करै करै जगत ब्यवहार।
अलखपुरुष कोइना लखै जाकी ज्योति अपार॥
प्यारेजी जाकी ज्योति अपार रचीं जिन जगमेंमाया। पानीते नरदेह रची जिन कञ्चन काया॥ प्यारेजी सब घट रहे बिराज पार जिनका नहिंपाया। वोही राम रह गया कालने सबको खाया ५॥

प्रह्लाद का वचन कुम्हारी से।

दोहा क्यों डोले झखमारती कहूँ वचन समझाय।
अग्निचढ़े ये ना बचैं तुरत भसम होजाँय॥
कुम्हारीरी तुरत भसमहोजाँय बचेंगे नाहिं बचाये। तोहिंचढ़े अपराध जीवते अग्नि चढ़ाये॥ कुम्हारीरी क्या इनकी बुन्याद नाम बच्चे कहलाये। ये बचने के नाहिं कालने निकट बुलाये ६॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लाद से।

दोहा आदिशक्ति अवतार हैं सब उनको समरथ्य।
अग्निचढ़े बचिजायँगे राम नाम है सत्य॥
प्यारेजी राम नाम है सत्य करैं सोई बनि आवै। तीनलोकके नाथ पार जिनका नहिं पावै॥ प्यारेजी अद्भुत मायारचै आप नर देह बनावै। सब उनके इख़्त्यार वेद जेहि ऐसेगावै ७॥

प्रह्लादजी का वचन कुम्हारी से ।

दोहा मेरे पिताके राज की कौन करैगा होड़ ।
मन चाहै मारै जिसे मन चाहै दे छोड़ ॥

प्यारीजी मनचाहै दे छोड़ हुआमैं जिनके ह्यारे । मेरे पिताकी जगनाहीं कोइ ओटनहारे ॥ प्यारीजी भयमानैं सबदेव गगन भय मानैं तारे । कौन तुम्हारा राम देश उनके कहिं न्यारे ८ ॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लाद से ।

दोहा कितने राजा होगये करके अपना जोर ।
हाथ पसारे वो गये जिनके लाख करोर ॥

प्यारेजी जिनके लाख करोर फ़ौज के चढ़े हैं रिसाले । लरजे है आकाश खम्भ धरतीके हाले ॥ प्यारेजी इकछत करते राज टरैंना रणसे टाले । कालबली सब डसे राम रहगये निराले ९ ॥

प्रह्लादजी का वचन कुम्हारी से ।

दोहा राजपिता का चक्र में तोकूँ ना कुछ सूझ ।
जो सुनपावैंगे पिता तो मारैंगे बिन बूझ ॥

प्यारीजी मारैंगे बिनबूझ कालतेरे शिरपरखेले । मेरेपिताकातेज नाहिं कोइ जगमें झेले ॥ प्यारीजी गण दैयत अरु देव नहीं छोड़ेबनबेले । जो तू चाहै खैर ज़बाँ तू मुखमें देले १० ॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लादजी से ।

दोहा मेरी जात गरीब है ना मेरी पुर शीश ।
अन्त राम सबसे बड़ा कहती बिस्वेबीश ॥

प्यारेजी कहती बिस्वेबीश रामकी करों बड़ाई । संतनके प्रतिपाल दुष्टके हैं दुखदाई ॥ प्यारेजी जिनको

दर्शनदेत तिन्हींकी सुफल कमाई। जिन हरि सुमिरे नाहिं जगत में नहिं गति पाई ११ ॥

दोहा हम जावैं दरबार में कहूँ वचन समुझाय।
जादिन उतरेगो अवाँ लीजो हमैं बुलाय॥

प्यारीजी लीजो हमैं बुलाय भरै तू हरिकी साखी। देखें तेरा राम अग्नि से कैसे राखी॥ कुम्हारीरी बच्चे जो बचजायँ द्रव्यतोहिं देहुँ बुलाके। जो बचने के नाहिं खाल तेरी देहुँउड़ाके १२ ॥

कुम्हारी बुलानेगई प्रह्लादजी को आवाँ तैयारभयो।

दोहा अवाँपका दिनतीन में लइहरिने फ़रियाद।
चली कुम्हारी बोलने बोलत है प्रह्लाद॥

प्रभुजी बोलतहै प्रह्लाद ढूँढ़ती ह्वांकोआई। सङ्ग चलो महराजकुँवर तोहिं बोलन आई॥ राजाजी सुध लीन्हीं महराज रामकी करों बड़ाई। रतन भण्डार है लाल देख प्रह्लाद रिझाई १३ ॥

प्रह्लाद का वचन कुम्हारी से।

दोहा अब तू अवाँ उतारले जो तेरे मन में सत्त।
अग्निचढ़े जोना बचे तो मारूँगा अलबत्त॥

कुम्हारीरी मारूँगा अलबत्त हमैं तू क्या समझावै। लीजै रतनउतार खड़ी क्यों बातबनावै॥ प्यारीजी मेरे पिताका राज देश में हुक्मचलावै। जिनका लेहै नाम राम वो कौन कहावै १४ ॥

कुम्हारी की परमेश्वर से विनय।

दोहा लज्जा तेरे हाथ है सुनो गरीबनेवाज।
विपतिविदारन दुखहरन सारन सबके काज॥

प्रभुजी सारन सबके काज विपति है हमको भारी।

खड़ेकुँवर प्रह्लाद राखले लाजहमारी ॥ लीन्हें रतन उतार भई दिलमाहिं करारी । बच्चे पीवैंदूध जहां बैठी महतारी १५ ॥

प्रह्लाद का वचन कुम्हारी से।

दोहा वो माता मेरी पापकी तू मेरी सतकीमाय।
चलो हमारे महल को दूँगा द्रव्य अघाय ॥

माताजी दूँगा द्रव्य अघाय कहूँ मैं सतकी बानी। गुणभूलूँगोनाहिं पढ़ाईरामकहानी ॥ भलेदिये उपदेश मेरेहिरदयने जानी । विषप्याले छुड़वाय प्याय दिये अमृत पानी १६ ॥

कुम्हारी का वचन प्रह्लाद जी से।

दोहा तुम राजा महराज हौ सुनो हमारी बात।
दान द्रव्य तेरादिया खाती हूँ दिनरात ॥

राजाजी खातीहूँ दिनरात शरण में गही तुम्हारी। तेरापिता सुनलेय करै मेरी जगख्वारी ॥ तुमजावो दरबार बातमैं कहत विचारी। लज्जातेरे हाथ सुनो यह अर्ज हमारी १७ ॥

प्रह्लाद का वचन कुम्हारी से।

दोहा मनमें चिन्ता मतकरो कहूँ वचन समझाय।
जो कुछ देना होयगा सो दूँगा घर पहुँचाय ॥

माताजी दूँगा घरपहुँचाय कुँवर ये वचन सुनाये। रामराम कहचले आपने महलों आये ॥ रानीजी बैठीं राजकुमार दूरसे शीशनवाये । रामराम मेरीलेय तेरे हम सुतकहलाये १८ ॥

माता का वचन प्रह्लाद से रागसोहनी।

किस्से सुनी तैंने रामकहानी नामपिताका त्यागरे ॥

एकदिन जन्मलियो मेरे महलन भये छतीसो रागरे ॥ रहस रहस कर मङ्गल गाये आज लगावत दागरे ॥ भजन भावमें प्रीति लगावत ऐसी पड़ी है लागरे ॥ राज तपै चहुँदेश तिहारो राखो पिताकी पागरे ॥ पिता कोप सुनहोय तिहारो हमको देगा दुहागरे ॥ ऐसा पुत्र जन्मि पछताई महल उड़ाये कागरे ॥ लक्ष्मण सोच करे दिल अन्दर अपने २ भागरे ॥ सो भोगत संसार जगत में जीवे सो खेलै फागरे १९ ॥

जवाब प्रह्लाद जी का रागसोहनी ।

हरदम हरिका नाम पियारा और झूठ सब ठाटरे । जाको शेष महेश रटत हैं ऐसे दीनदयालरे । राक्षस मार गरद करडारे सन्तन के प्रतिपालरे ॥ निज स्वारथ की जगजानै है ऐसी जगकी चालरे । कपटी कुटिलभयेमन मूरख देख बिरानो मालरे ॥ भवसागर की धार कठिन है भजनसे उतरे पालरे । क्षणमें पार उतर गये सोई जो साहब के लालरे ॥ अमृत छोड़ जहर को पीवैं तिनको कौन हवालरे । लक्ष्मण सोच समझ के चलिये शिर पर गूँजत कालरे २० ॥

जवाब माता का प्रह्लाद जी से ।

दोहा रामनाम किस्से सुना कौन मिला तोहिं दूत ।
हमको सत्य बतायदे सुन रजवंशी पूत ॥

प्यारेजी सुन रजवंशी पूत मेरे प्रह्लाद पियारे । रामनाम मत लेय वचन तू मान हमारे ॥ तेरा पिता सुनलेय देय मुझे देश निकारे । मार उड़ावे खाल नहीं कोई बर्जनहारे २१ ॥

वचन प्रह्लाद का माता से ।

दोहा रामनाम जबसे सुना कटीं सकल यम ब्याध ।
जादिन से निश्चय भई कहै कुँवर प्रह्लाद ॥

माताजी कहै कुँवर प्रह्लाद अर्ज मेरी सुनि लीजै । सबझूठा संसार रामका सुमिरण कीजै ॥ माताजी वे त्रैलोकीनाथ चरण उनके चितदीजै । विष घूंटीदे छोड़ ज्ञान के अमृत पीजै २२ ॥

जवाब माता का प्रह्लाद जी से ।

दोहा सुनत वचन प्रहलादके दोउकर मीड़े हाथ ।
रामनाम तू छांड़ दे सुनो कुँवर मेरी बात ॥

बेटारे सुनो कुँवरमेरीबात करै क्यों लोगहँसाई । दुख से पाले लाल कहा तुमको बनआई ॥ बेटारे जो तू चाहै खैर पिताकी करो बड़ाई । रामनाम दो छोड़ तेरी क्यों शामत आई २३ ॥

जवाब प्रह्लादजी का माता से ।

दोहा राजदेख भूली फिरै तूका जानै सार ।
रामनाम इक सत्य है कहते वेद पुकार ॥

माताजी कहते वेद पुकार मेरे हिरदय में बोलै । बिना तराजू बांट जगतको बैठातोलै ॥ माताजी ये जग सुपना रहै रहै मत मम को भूलै । जिन हरि सुमिरा नाहिं जगत में भटकत डोलै २४ ॥

जवाब माता का प्रह्लादजी से ।

दोहा जादिन से पैदा हुये सुनो हमारे लाल ।
राजनीति जानी नहीं कुलकी भूलेचाल ॥

बेटारे कुलकी भूले चाल पिता तेरा तपधारी । जानै सब संसार मुल्क में दुनियां सारी ॥ बेटारे भय मानै

सब देश बड़े योधा बलकारी। छोड़ रामका नाम कही तू मान हमारी २५॥

जवाब प्रह्लादजी का माता से।

दोहा जादिन से पैदा हुये हम तेरे फरजन्द।
खुशीभये सब देवता घरघर भयो अनन्द॥

माताजी घरघर भयो अनन्द बजे देवन घर बाजे। खुशी भये नर नारि बड़े राजे महराजे॥ माताजी वेद भरें हैं साखि रहस कर इन्दर गाजे। वे तिरलोकीनाथ मेरे घट आन बिराजे २६॥

जवाब माताका प्रह्लादजी से।

दोहा बालक तेरी बुद्धिहै नेक न शोच कराय।
कही सुनी मानै नहीं हमसे नाहिं डराय॥

बेटारे हमसे नाहिं डराय करै तू बहुत जुबानी। मैं समझाऊं तोहिं कही मेरी एक न मानी॥ बेटारे बालक तेरी बुद्धि भये ऐसे अभिमानी। हमको देह निकाल चढ़े जब तोहिं जवानी २७॥

वचन प्रह्लाद का माता से।

दोहा तू सतकी मेरी मात है जो हरि राखे लाज।
हम तेरे सुत लाड़िले बैठी भोगो राज॥

माताजी बैठी भोगो राजकरी तैंने सुफल कमाई। धन्य तुम्हारे भाग देशमें फिरै दुहाई॥ माताजी मैंने सुमिरे राम यही मेरेमन आई। वे तिरलोकीनाथ कहाँलौं करौं बड़ाई॥

जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा तेरे पिता को बोलके मैं दूंगी समझाय।
नाम पिता को छोड़के राम दुहाई खाय॥

बेटारे रामदुहाई खाय पिताकानाम बिसारे। बरजो मानत

नाहिं बरजरहि सांझ सकारे॥ बेटारे दुखसे पालेलाल मान मेरे क्यों मारे। राजघरों के पूत भजनमें चित क्यों धारे २६॥

राजाका वचन रानी से।

दोहा सन्ध्या समय सुहावनी भई रसोई त्यार।
राजा आये महल में बोले वचन सम्हार॥

रानीजी बोले वचन सम्हार खड़ी जहँ राजकुमारी। चन्द्राकीसी किरण खिली जैसे स्वर्ग उजारी॥ रानीजी हम तेरे भरतार नारि तुम हमको प्यारी। क्यों तेरा चित्त उदास शोच क्या तुमको भारी ३०॥

रानी का वचन राजा से।

दोहा हाथ जोरि अर्जी करै वो पतिबरता नार।
राज तुम्हारा देश में जानत है संसार॥

राजाजी जानत है संसार हिये में ज्ञान उपावो। तुम घर है प्रह्लाद राजकी रीति सिखावो॥ राजाजी पंडित लेहु बुलाय कुँवर चटशाल बिठावो। दिनदिन स्यानेहोयँ फेर पाछे पछतावो ३१॥

राजा का वचन पटरानी से।

दोहा तू तिरिया भूली फिरै बैठरहो दिलशाद।
पढ़ने लायक है नहीं बालक है प्रह्लाद॥

रानीजी बालकहै प्रह्लाद कुँवर अबहींहै यानो। क्या मानेगा सीख पढ़नको नाहीं स्यानो॥ रानीजी हम राजा महराजे बजै मेरे नौबतखानो। पुत्तर मेरे चार नहक में झगड़ो ठानो ३२॥

रानी का वचन राजा से।

दोहा तुम राजा महराज हो सब राजों शिरमौर।
ये तेरा प्रह्लाद जी कहै और की और॥

राजाजीकहै औरकी और मेरीआज्ञा नहिंमानी। वर्ज-रही दिनरात बनोडोलैसैलानी॥राजाजी पुत्रहैं तेरे चार बड़ेयोधा अभिमानी। यहबेटा प्रह्लाद करैगा बहुतबिरानी॥

जवाब राजाजी का रानी से।

दोहा भोर सबेरा होतही कहूं वचन समझाय।
घरका पण्डित बोलके दूंगा कुँवर बिठाय॥

रानीजी दूंगा कुँवर बिठाय तेरा जो हुक्म बजावै। बैठी भोगो राज शोच मनमें मतलावै॥ रानीजी कुला-चार्य्य गुरुदेव बहुत इनको समझावै। तुम क्यों करो अँदेश तेराजी क्यों घबरावै ३४॥

रानी का वचन राजा से।

दोहा मैं पतिबरता नारिहूं तुम मेरे भरतार।
द्विजपर कुँवर पठाइये शुभघड़ी लेहुबिचार॥

राजाजी शुभघड़ी लेहु बिचार कुँवर बाला है मेरा। कर कञ्चनकेदान तेरेघर माल घनेरा॥ राजाजी घरका पण्डित बोल जबी होइजाय सबेरा। ऐसी विद्यादेहु हुक्म तो मानै तेरा ३५॥

राजा का वचन पण्डितजी से।

दोहा भोर भये राजा उठे जा बैठे दरबार।
शुक्राचार्य बुलायके कहते वचन सम्हार॥

राजाजी कहते वचनसम्हार कुँवर चटशाल बिठावो। बालक है प्रह्लाद बहुत इसको समझावो॥ पांड़ेजी मेरे कुलकी रीति सभी इनको सिखलावो। दूंगा द्रव्य अघाय तलब घर बैठे पावो ३६॥

पांड़ेजी का वचन राजा से।

दोहा लेजाऊं चटशाल में बालक है प्रह्लाद।

लाऊं कुँवर पढ़ायके ना करिहौं फिरियाद ॥

राजाजी ना करिहौं फिरियाद कुँवर चटशाल पढ़ाऊं। जो तेरे कुलकी चाल सभी इनको समझाऊं ॥ राजाजी तू मेरा यजमान तेरा मैं विप्रकहाऊं। पढ़के होय तयार तलब घरबैठे पाऊं ३७॥

जवाब राजाका पांड़ेजी से।

दोहा जादिन कुँवर पढ़ायके लावोगे दरबार।
रथ घोड़ा अरु पालकी दूंगाअधिक शिंगार ॥

पांड़ेजी दूंगा अधिकशिंगार करै मत शोचबिचारी। लेजावो चटशाल कुँवर है शरण तुम्हारी॥ पांड़ेजी हम तेरे यजमान तेज मेरा है भारी। हीरा मोती लाल दरब की भरी बखारी ३८॥

पांड़ेजी का वचन प्रह्लाद से।

दोहा शुक्राचारज यों कहैं तू मेरी रख लाज।
आ मेरे ढिग बैठजा कक्के पढ़ महराज॥

कक्केपढ़ महराज वचन तू मान हमारे॥ हिरणाकुशके पुत्र फिरेक्यों मनकेमारे॥ प्यारेजी कक्केचाहे खैर ज़रा मेरे आगे आरे। दूंगाबहुत पढ़ाय मेरेप्रह्लाद पियारे३६॥

प्रह्लाद का वचन पांड़ेजी से।

दोहा हाथ जोड़ अर्जी करै कहै वचन शिरनाय।
तुम पण्डित बुन्याद के कक्के देहो पढ़ाय ॥

पांड़ेजी कक्के देहो पढ़ाय हुक्म तेरा मैं मानूं। घट में बोले राम हरफ़ दूजा नहिं जानूं ॥ खखे खेदमतकरो नहीं तो झगड़ा ठानूं। सुखमें दुखड़ा देह तेरे मैं जीकीजानूं ४०॥

पांड़ेजी का वचन प्रह्लाद से।

दो० सुख में दुखड़ा है नहीं कहना मेरा मान।
तुम राजा के कुँवर हो याते देहौं ज्ञान ॥
भैयारे याते देहौं ज्ञान फिरे क्यों हुआ दिवानो। नामपिता का लेहु खैर जो आपनि मानो ॥ भैयारे घघ्घा घरका राज देख क्यों भये दिवानो। इकछत तेरा राज बजे है नौबतखानो ४१ ॥

प्रह्लाद का वचन पांड़ेजी से।

दोहा तू पण्डित भूलो फिरे कहै और की और।
बिना नाम श्रीराम के नाकहिं दीखै ठौर ॥
पांड़ेजी नाकहिं दीखै ठौर हमैं तू ज्ञान बतावै। अलख रूप ओंकार जिन्होंका पार न पावै ॥ पांड़ेजी घघ्घा घर का राज छोड़ जङ्गल को जावै। जग भूला संसार नहक में भरम गँवावै ४२ ॥

पांड़ेजी का जवाब प्रह्लाद जी से।

दोहा असुरपने को जानदे एक बात सुन लेय।
राज तुम्हारा देशमें क्यों नन्हापन लेय ॥
प्यारेजी क्यों नन्हापन लेय कहा तुमको बनिआई। चारचक्र में राज पिताकी फिरै दुहाई ॥ भैयारे ऐसो चातुरबने करै क्यों लोग हँसाई। कुलको आवै लाज रामकी करो बड़ाई ४३ ॥

प्रह्लादका वचन पांड़ेजी से।

दोहा नन्हापन से काम क्या बोलो वचन सम्हार।
मेरे तो वह एक है राम नाम आधार ॥
गुरुजी राम नाम आधार सदा हितके अधिकारी। साखी भरे पुराण वेद कहैं तत्वविचारी ॥ पांड़े जी ऐसे

चातुर बनेगई कहँ अकल तुम्हारी । जिनकोरटैं महेश तासुकी सुरति बिसारी । पांड़ेजी का वचन प्रह्लाद से ।

दोहा छच्छे छीकतही चले आये मेरे द्वार ।
जज्जे जुगति विचारिकै बेंतैं दूंगा मार ॥

भैयारे बेंतैं दूँगा मार बदनकी खाल उड़ाऊँ । नेक न राखूं मोह हुक्म राजाका पाऊँ ॥ भैयारे क्यों नन्हापनदेह रोज तुमको समझाऊँ । झुर झुर जाय शरीर कहांलौं मैं गमखाऊं ४५ ॥

प्रह्लाद जी का वचन पांड़ेजी से ।

दोहा छच्छे छीक मनाय के जज्जे जुगत बिचार ।
सुमिरण कीजै रामको जाकी ज्योति अपार ॥

पांड़ेजी जाकी ज्योति अपार जगत सुपनेकी माया । मेरे घटमें राम पार जिनका नहिं पाया ॥ पांड़ेजी झझझे झूँठे ख्याल हमें क्या ज्ञान बताया । नन्ने निबके चलो अमर रहती नहिं काया ४६ ॥

पांड़ेजी का वचन प्रह्लाद जी से ।

दोहा टट्टे घड़ि २ टालता तेरे घटमें राम ।
कही सुनी मानै नहीं अकल भई बौरान ॥

भैयारे अकल भई बौरान नाम प्रह्लाद कहाके । सॉटी मारूँ चार पड़े धरणी पै जाके ॥ भैयारे ऐसा ढीठ जो भया रहा मुक्का समझाके । देखूं तेरी दाद कौन तोहिं लेगा छुड़ाके ४७॥ प्रह्लादजी का वचन पांड़ेजी से ।

दोहा ट्टा टारकरो नहीं जो सुधरे तेरे काम ।
मेरे तो वो एकहै भली करेंगे राम ॥

पांड़ेजी भली करेंगे राम उन्हीं यह देह बनाई । लज्जा

राखनहार सदा सन्तन सुखदाई ॥ पांड़ेजी वो क्यों ठोकर खाय जिन्हों के रामदुहाई । घड़ी घड़ी प्रतिपाल भगत केसदा सहाई ४८॥

पांड़ेजी का वचन प्रह्लादजी से ।

दोहा तू बालक नादान है डिगमिग करे शरीर ।
सांटी मारूँ खैंचिके ढरे नैनों से नीर ॥

प्यारेजी ढरे नैनोंसे नीर खड़ा तू बात बनावै । बोले वचन कठोर पढ़ा तोपै नहिं जावे ॥ भैयाजी सब दिन खेलत फिरै लाज तोको नहिं आवै । खैंच मरोड़ौं कान हमैं तू बहुत सतावै ४९ ॥

प्रह्लादजी का वचन पांड़ेजी से ।

दोहा पांड़े राम भजा करो वेद कहै तत्कार ।
बिपतिविदारण दुखहरण जाकीज्योतिअपार॥

पांड़ेजी जाकी ज्योति अपार हमैं तू क्या समझावै । अमृतबूटी छोड़ घोलके विष क्यों प्यावै ॥ पांड़ेजी तू मेरा महराज और कुछ कही न जावै। हंसा मोती चुगैं तिन्हें तू चना चुगावै ५०॥

पांड़ेजी का वचन प्रह्लादजी से ।

दोहा दद्दे दूबर होयगी कहना मेरा मान ।
धध्धे धड़के बैठजा नन्हापन दे जान ॥

प्यारेजी नन्हापन देजान बात मैं कहूँ मतेकी । रामनाम दे छोड़ करो तुम हमसे नेकी ॥ भैयारे राक्षस कुल अवतार भये तुम कौन विवेकी । लेहु पिता का नाम करो मत हमसे सेकी ५१ ॥

प्रह्लादजी का वचन पांड़ेजी से ।

दोहा दद्दे दूबर क्यों बने घट में बोले राम ।
धध्धे धर्म पहुँचा नहीं ना काहू से काम ॥

पांडेजी ना काहूसे काम रामका सुमिरण कीजै। नन्ने निकट बुलाय सीख ऐसी ना दीजै॥ पांडेजी बातकहो कोइ सांच अर्जमेरी सुनलीजै। विषबूटीदे छांड़ घोटकर अमृत पीजै ५२॥

जबाव पांडेजी का प्रह्लादजी से।

दोहा पप्पा परपरे होयगा हमसे करे बिवाद।
शुभकी घड़ी विचार के नामधरा प्रह्लाद॥

प्यारेजी नामधरा प्रह्लाद कही मेरी एकन मानी। तुम लड़का बेहोश सीख तुम लई बिरानी॥ प्यारे फफ्फे फैल मचाय पढ़ै तू राम कहानी। मैं रह्यों बहु समझाय कहा तैं मनमें ठानी ५३॥

जबाब प्रह्लादजी का पांड़ेजी से।

दोहा पप्पे परे वो होयँगे जिनके मनमें पाप।
हाथ सुमिरिणी लेलई रही लोभ में ब्याप॥

पांड़ेजी रहीलोभमें ब्याप लोभ खांड़ेकी धारा। यासों बचो न कोइ लोभने सबको मारा॥ पांड़ेजी जिसने त्यागा लोभ पलक में भयाहै गुजारा। भवसागर में आय उतरगयो परले पारा ५४॥

जबाब प्रह्लादजी से पांड़ेजी का।

दोहा बब्बे करे बुराइयां भभ्भे भला न होय।
मम्मे मनमें जानले बैठोगे कुल खोय॥

प्यारेजी बैठोगे कुलखोय लाज कुल कान बिगारी। किन्ने दियो बहकाय अकल कहँ गई तुम्हारी॥ प्यारे जी कौन मिला तोहिं दूत सुरत टरती नहिं टारी। लेवो पिताका नाम करो क्यों अपनी ख्वारी ५५॥

जबाब प्रह्लादजी का पांड़ेजी से।

दोहा बब्बे बुरा न बोलते जो कोई भले होंय।

मम्मे मोती समुद्र के सार न जाने कोय॥
प्यारेजी सार न जाने कोय ताहि कोइ शाह पिछाने। महामूढ़ अज्ञान सार उनकी क्या जाने॥ पांड़ेजी तुम हमरे महराज हमें क्यालोगे पढ़ाके। सूवा हरिको नाम व्यर्थ कियो झगड़ा आके ५६॥

जवाब पांड़ेजी का प्रह्लाद से।

दोहा राम सुमिरना छोड़दे कहना मेरा मान।
लाजकान कुल जायगी बहुतेहो वैरान॥
प्यारेजी बहुतेहो वैरान रोज तुमको समझाऊं। तू मेराहै शिष्य तेरा मैं गुरू कहाऊं॥ प्यारेजी मान हमारी सीख राजकी नीति पढ़ाऊं। तू मूरख अज्ञान कहांलौं तुझे सिखाऊं ५७॥

वचन प्रह्लाद का पांड़ेजी से।

दोहा ररैंराजी राम के जिनके अद्भुत ख्याल।
मन चाहे कारज करैं ऐसे दीनदयाल॥
पांड़ेजी ऐसे दीनदयाल रची जिन लखचौरासी। वेदभरे हैं साख नाम जिनका अविनासी॥ पांड़ेजी सुर नर मुनिजन रटैं जाहि सब स्वर्गनिवासी। तू डोले बेइमान करै है जिनकी हाँसी ५८॥

वाक्य पांड़े शुक्राचार्य्य का प्रह्लाद जी से।

दोहा वादिन तेरा कौनहै जादिन जन्मलियो।
बजी बधाई महल में कंचन दान दियो॥
प्यारेजी कंचन दीये दान शोच मन में ना लाये। गजहस्ती अरु रत्न द्रव्य उन खूब लुटाये॥ प्यारेजी अब तुम बने कठोर राम से नेह लगाये। कुल में भये कुपूत भेद तेरा ना पाये ५९॥

प्रह्लादजी का वचन पांड़ेजी से।

दोहा वे हरि दीनदयालहैं विपतिविदारनहार।
तिनका सुमिरणकीजिये भजिये बारंबार॥

पाड़ेजी भजिये बारंबार जगत के भूंठेनाते। राज देख रहे भूल फिरो क्यों मदकेमाते॥ पांड़ेजी राम सुमिरनो सार हमैं तुम कहा पढ़ाते। कहौ और से और हमैं तुम नहीं सुहाते ६०॥

पांड़ेजीका वचन राजाजी से।

दोहा सुनतवचन प्रह्लाद के पुस्तकधरी सम्हार।
बाँह पकड़ के ले चले राजा के दरबार॥

प्रभुजी राजाके दरबार जाय पण्डित ललकारे। तुमहो आपहि राव मान क्यों मेरे मारे॥ राजाजी यह तेरा प्रह्लाद सम्हारे से न सम्हारे। मेरे वश को नाहिं सुनो तुम वचन हमारे ६१॥

पांड़े शुक्राचार्य्य से राजाहिरण्यकशिपु कहते हैं।

दोहा पण्डित के सुन वचन को हिरण्यकशिपुमहराज।
बोले वचन सम्हार के सुन मेरे महराज॥

पांड़ेजी सुन मेरे महराज कही सो मैंने जानी। बालक है प्रह्लाद उमर उसकी है यानी॥ पांड़ेजी हित सों देहु पढ़ाय बड़े तुम पण्डित ज्ञानी। दूंगा बहुत इनाम कहूं मैं सतकी बानी ६२॥

पांड़ेजी का वचन राजाजी से।

दोहा तुम राजा महराजहो करो जगत को पाल।
मेरे वश की है नहीं बिगड़ गई चटशाल॥

राजाजी बिगड़गई चटशाल कही मेरी एक न मानी। जो मारूं मैं बेंत लड़ें महलों की रानी॥ राजाजी सम-

माया दिन रैन पढ़ै है राम कहानी। तुम मेरे महराज कहूं मैं सतकी बानी ६३॥

शुक्राचार्य्य से वाक्य राजा हिरण्यकशिपुका।

दोहा तुम पण्डित बुन्यादके मैं समझाऊँ तोह।
कान पकड़ लै जाइये मैं राखूं नहिं मोह॥

पांड़ेजी मैं राखूँ नहिं मोह करो तुम अपनी चाही। इसकी दाद फिरयाद कोई लेने का नाही॥ पांड़ेजी सांटी मारो चार पड़ै धरतीपै जाई। पूत नहीं यह दूत करे मेरी लोग हँसाई ६४॥

शुक्राचार्य्य का वचन प्रह्लाद से।

दोहा वे पण्डित परवीण हैं कोमल जिनके गात।
जा बैठे चटशाल में पकड़ कुँवर का हात॥

प्यारेजी पकड़ कुँवरका हाथ कहै वो पण्डितज्ञानी। तू मेरा है शिष्य छोड़दे राम कहानी॥ प्यारेजी राजघरों के पूत कही तैं किसकी मानी। ऐसी कहिये नाहिं कुँवरजी मुखसे बानी ६५॥

जवाब प्रह्लाद का पांड़ेजी से।

दोहा तू पण्डित भूला फिरै कहूं वचन समझाय।
राम नाम जाना नहीं पाप रहा मनछाय॥

पांड़ेजी पापरहा मनछाय अकल कहँ गई तुम्हारी। बिनाखम्भ के धरणि खड़ी है हरि आधारी॥ पांड़ेजी सप्तद्वीप नवखण्ड खलक जानै है सारी। तीनलोक में ज्योति अलख की माया न्यारी ६६॥

दूसरा जवाब प्रह्लाद का पांड़ेजी से।

दोपा रान नाम के कारणे तनक नवायो शीश।
कहा विभीषण दे मिले लङ्कदई बख़शीश॥

पांड़ेजी लङ्कदई बख़शीश फिरैहै रामदुहाई। रावण

को कियो नाश जानकी लियो है छुड़ाई ॥ पांड़ेजी सीताके मनराम पलट कौशलको धाये। भरत सुनी यह बात राम मिलने को आये ६७॥

तीसरा जवाब प्रह्लाद जी का पांड़ेजी से।

दोहा राम बढ़ाये सो बढ़े बलकर बढ़ा न कोय।
बलकरके रावण बढ़ा क्षण में डारा खोय॥

पांड़ेजी क्षणमें डारा खोय लङ्कसी पुरी उजारी। राक्षस कुलको नाश करो सीताजी उबारी॥ पांड़ेजी कुम्भकरण को मार सकल कुल करा विनासी। जो शरणागत भये काटदी यमकी फांसी ६८॥

पांड़ेजी गुस्साहो के प्रह्लाद जी से बोले।

दोहा सुनत वचन प्रह्लाद के पांड़े उठे रिसाय।
मारा बेंत उठाय कै परे धरणि पै जाय॥

भैयाजी पड़े धरणि पै जाय सड़ासड़ बेंत लगाई। छोड़ रामका नाम पिता की खैंच दुहाई॥ भैयाजी नातर करूँ इलाज तेरी क्यों शामत आई। बर्जो मानै नाहिं दुष्ट मोहिं देत दिखाई ६९॥

प्रह्लादजी का वचन पांड़ेजी से।

दोहा हँसके वचन सुनावते सुनो गुरूजी बात।
मेरे घटमें राम हैं लई सुमिरनी हात॥

पांड़ेजी लई सुमिरनी हाथ हमैं तू क्या समझावै। अलख रूप ओंकार जिन्हों का पार न पावै॥ पांड़ेजी जिन्ने रची है सृष्टि सर्वदा प्रलय करावै। उनका सुमिरण करो नहक में मन भटकावै ७०॥

पांड़ेजी का वचन राजाहिरण्यकशिपु से।

दोहा सुनत वचन पण्डित उठे जरा न लाये बार।
बांह पकड़ आगे धरे धक्के दीये चार॥

पांड़ेजी धक्के दीये चार पकड़ राजा पै लाये । यह तेरा प्रह्लाद पढ़ैगा नाहिं पढ़ाये ॥ प्रभुजी हम तो हैं निर्दोष बहुत हमने समझाये । तू जानै तेरा काम कुँ-वर तेरे द्वारे आये ७१ ॥

राजा का वचन पांड़ेजी से ।

दोहा जा पण्डित घर आपने मतकर शोचविचार ।
तेरा पढ़ाया ना पढ़ै मैं नहिं रखता प्यार ॥

पांड़ेजी मैं नहिं रखता प्यार कुँवर की शामत आई । पूत नहीं यह दूत करै मेरी लोक हँसाई ॥ पांड़ेजी जिनका लेहै नाम सो है मेरा दुखदाई । मार उड़ाऊं खाल करैगा कौन सहाई ७२ ॥

प्रह्लाद का वचन राजा से ।

दोहा गुरू पढ़ाये सो पढ़े कक्के सिद्धो चार ।
एका पढ़ ग्यारह पढ़े गिनती के हज्जार ॥

दाऊजी गिनती के हज्जार पढ़े हम बिकट पहाड़े । कक्के पढ़े अनेक लगे हरि नाम पियारे ॥ दाऊजी राम नाम के हरफ़ मैंने हिरदेमें धारे । अरु सब झूठे ख्याल जगत में धुन्ध पसारे ७३ ॥

राजा का वचन प्रह्लादजी से ।

दोहा हम राजा के तेज हैं तू बालक नादान ।
कही सुनी मानै नहीं बहुत करूं वैरान ॥

प्यारेजी बहुत करूं वैरान भयो तू फिरै दिवानों । शहर बसै मुलतान मेरा सब जगने जानों ॥ प्यारेजी हस्ती घूमें द्वार बजै मेरे नौबतखानों । हीरा मोती लाल द्रव्यको भरो खजानों ७४ ॥

प्रह्लाद का वचन राजा हिरण्यकशिपु से ।

दोहा पदम करोड़ों होगये बड़े शूर महमंत ।

एक नाम ओंकारको जगमें रहगया तंत ॥

दाऊजी जगमें रहगया तंत जगत मैंने सुपना जाना। मनमें उपजा ज्ञान तजा मैंने गर्व गुमाना ॥ दाऊ जी लाखों राजा भये असुर बहुजोड़ खजाना। चन्दन उपटे अङ्ग सोई धर दिये मशाना ७५ ॥

राजा का वचन प्रह्लाद जी से।

दोहा राजतपे नौखण्ड में नाहवर्ण कुलहीन।
गण दैयत अरु देवता सोभी रहैं अधीन ॥

प्यारेजी सो भी रहैं अधीन हुक्म मेरे जगमें भारे। ब्रह्माके वरदान वचन शिवशङ्कर हारे ॥ प्यारेजी अमर करी मेरी देह टरैना रणते टारे। जिनका ले तू नाम देश कहुँ उनके न्यारे ७६ ॥

प्रह्लाद का वचन राजाजी से।

दोहा घट घट रहा विराजके मुखसे बोलो राम।
रोम रोम में बसरहा नहीं और से काम ॥

दाऊजी नहीं और से काम हमैं हरि नाम पियारे। तीन लोकके नाथ रचे जिन जगत पसारे॥ दाऊजी सन्तनकी प्रतिपाल कोपकर असुर सँहारे। तुमको है अभिमान फिरो क्यों मदके मारे ७७ ॥

जवाब राजा का प्रह्लाद से।

दोहा राजा उठे रिसायके चाबुक लियो मँगाय।
मया मोह राखूं नहीं दूंगा खाल उड़ाय ॥

प्यारेजी दूँगा खाल उड़ाय कहा मेरा नहिं मानै। इकछत मेरा राज जगत मुझसे भय मानै ॥ प्यारेजी तुम भये भले कपूत लगेहो लोग हँसाने। मोसों करै जवाब राजके झगड़े ठाने ७८ ॥

प्रहलाद का वचन राजा से।

दोहा करजोरूँ अर्जीकरूँ लगा रामसे ध्यान।
जिनके हम आधीन हैं तुम करते अभिमान॥

दाऊजी तुम करते अभिमान सदा जगरहा न कोई। रहा रामका नाम सदा जग रहा न सोई॥ राजाजी राज देख मत भूल सदा तेरा राज न होई॥ यश बाकी रहजाय बात अपनी क्यों खोई ७९॥

राजाजी का वचन प्रहलाद से।

दोहा पूत नहीं मेरा दूत है करै सामने बाद।
बिनमारे छोड़ूँ नहीं बोललिये जल्लाद॥

भैयारे बोल लिये जल्लाद सुनो यक बात हमारी। लेजा इसको बांध करे क्यों शोच विचारी॥ भैयारे यह राजोंकी रीति पैज टरती ना टारी। इसको डालो मार सभी देखैं नर नारी ८०॥

जवाब राजा से जल्लाद का।

दोहा तुम राजा महराजहो बैठरहो गमखाय।
ऐसो कुवँर विनाशकै फिर पीछे पछताय॥

राजाजी फिर पीछे पछताय यतन कुछ बनि नहिं आवै। लाख यतन तुमकरो कुँवर ऐसानहिं पावै॥ गद्दी जायगी बिगड़ कौन तेरा बंश बढ़ावै। यह तेरा प्रह्लाद जगत में नाम चलावै ८१॥

जवाब राजा का जल्लाद से।

दोहा रिसभरके राजा कहै क्या समझावै मोहिं।
हुकुम अदूली तू करै पहले मारूँ तोहिं॥

भैयारे पहलेमारूँ तोहिं वचन तोकूँ समझाऊँ। खैंच भरूँ तो खाल ज़रा नहिं देर लगाऊँ॥ भैयारे दूँगा

अगिनि लगाय शोच मनमें ना लाऊँ। तपै राज नौखंड बखत ऐसा नहिं पाऊँ ८२ ॥

जल्लादका वचन राजा से।

दोहा काली त्योरी देखके बोले वचन सम्हार।
मारैंगे प्रह्लादको ज़रा न लागे बार॥

राजाजी ज़रा न लागे बार काम मैं तेरासारूं। तुम राजामहराज हुकुम तेरा ना टारूं॥ राजाजी शूली से बचजाय तुरत फांसीदे मारूं। गिरिवर पै लेचढूं कुँवर को ह्वां से डारूं ८३ ॥

राजाका जवाब जल्लाद से।

दोहा बाँहपकड़ ले जाइये कहूं वचन समझाय।
दीजै कुँवर विनाश के तू दहशत क्यों खाय॥

भैयारे तू दहशत क्यों खाय बात मेरि करो क़बूली। दूंगा बहुत इनाम हुकुम क्यों करो अदूली॥ भैयारे तू नेक दरद मतकरै कुँवरको धरदो शूली। खाये मेरेमाल कुँवरकी काया फूली ८४ ॥

वचन जल्लाद का प्रह्लाद से।

दोहा राजनीति जानी नहीं याते हुआ बेपीर।
सूरत देखी कुँवर की ढरै नैनों से नीर॥

प्रभुजी ढरै नैनों से नीर उमड़ के आई छाती। ना कुछ मेरा दोष नहीं कुछ पार बसाती॥ प्रभुजी ऐसे मुरख बने खराब देखे अपघाती। जो शूलीदूँ नाहिं मँगावै खूनी हाती ८५ ॥

जवाब जल्लाद से प्रह्लाद का।

दोहा सूरत जिनकी सोहनी कोमल जिन के गात।
बोले वचन सम्हार के सुन जलाद मेरीबात॥

भैयाजी सुन जल्लाद मेरीबात पिता मेरा तपधारी। हुकुम टरैगा नाहिं तेज जिनका है भारी॥ भैयारे शूली पर धरिदेउ करौ मत शोच विचारी। कलम निमानी बगी टरैना तुमसे टारी ८६॥

जवाब जल्लाद का प्रह्लादजी से।

दोहा हाथ मरोड़ै शिर धुनै शोच करै पछिताय।
यह राजा मूरखभया क्या मेरी पारबशाय॥

प्यारेजी क्या मेरी पार बशाय भये राजा दुखदाई। हाल कहै प्रह्लाद मेहर जिनको नहिं आई॥ शूली दई है भँगाय जरा नहिं देर लगाई। धरे कुँवर प्रह्लाद भये हैं राम सहाई ८७॥

प्रह्लादजी का वचन।

दोहा शूली बड़ी कठोर है धार बड़ी है तेज।
लगी कुँवर प्रह्लाद को फूलों कीसी सेज॥

प्यारेजी फूलों कीसी सेज कुँवर प्रभु के गुणगावै। धन्य मेरा महराज पार जिनका नहिं पावै॥ प्यारेजी निश्चय करके रटो बिपति में फन्द छुड़ावै। दरशन से गति होय कुमति के धाम नशावै ८८॥

हिरण्यकशिपु का वचन जल्लाद से।

दोहा राव कहै जल्लाद से क्या तेरी पहचान।
पकड़ भुजा देमार के कहना मेरा मान॥

भैयारे कहना मेरा मान ऐसी क्या हिम्मतहारी। पेशकब्ज ले हाथ कुँवर के मार कटारी॥ भैयारे उपजे पेड़ करील जहां मेरी केसर क्यारी। बिगड़ गई सब खीर नोन जामें पड़गया खारी ८९॥

जवाब प्रह्लाद का जल्लाद से।

दोहा तू मेरा जल्लाद है ना कुछ तेरा दोस।
खड़े पिता हैं साम्हने मेरी नाड़ मसोस॥

भैयारे मेरी नाड़ मसोस मार मेरे चार तमाचे। मेरे पिताके क़ौलकरो तुम पलमें सांचे॥ भैयारे बिधना केरे अङ्क लिखे मेरे किसने बांचे। कलम निमानी बगी रहै ना मन में सांचे ६०॥

जल्लाद का वचन प्रह्लाद से।

दोहा सुनत वचन प्रह्लाद के दोनों मीड़े हाथ।
मेरे वशकी है नहीं सुनों कुँवर मेरी बात॥

प्यारेजी सुनों कुँवर मेरी बात देखके जी घबड़ावै। ऐसा मिला नर कौन आयकै तोहिं छुड़ावै॥ प्यारेजी तुम कारण दूँ शाप यतन कुछ बन नहिं आवै। याद करो कर्त्तार बात सबही बनिआवै ६१॥

राजा का वचन जल्लाद से।

दोहा उठा राव ललकार के क्यों करता है देर।
मार गेर प्रह्लादको मेरा डर दे गेर॥

भैयारे मेरा डरदे गेर कुँवरको देदे फांसी। जभी पड़ै मोहिं चैन रहै सुख बारहमासी॥ जाको लेहै नाम करै मेरी जगमें हांसी। एकछत मेरा राज कौन जानै अविनासी ६२॥

जवाब जल्लाद का प्रह्लाद जी से।

दोहा राजा के सुन वचन को हिरदय किया कठोर।
पकड़ भुजा प्रह्लाद की करै कुँवर पै जोर॥

प्रभुजी करै कुँवर पै जोर पकड़ धरती से मारे। छातीपै चढ़गये कुँवरको फन्दा डारे॥ प्रभुजी पेशकब्ज

लिये हाथ कुँवरको जब ललकारे। छोंड़ रामका नाम वचन तू मान हमारे ६३॥

प्रह्लाद का वचन जल्लाद से।

दोहा राम नाम सुमिरण करै कंचन जिनकी देह।
फाँसी से भी बचगये तो हरिसे लागा नेह॥

प्रभुजी हरिसे लागा नेह देखते नर औ नारी। दादी बूवा तके खड़ी देखे महतारी॥ प्रभुजी दिलमें धीरज बांध बात में कहूँ बिचारी। घटमें बोले राम जान जिनको नहिं प्यारी ६४॥ प्रह्लादजी की बूवा कहै अपने भाई से।

दोहा तब हिरणाकुशकी बहिन बोली वचन सम्हार।
क्यों मारे प्रह्लाद को बेटे तेरे हैं चार॥

भाईरे बेटे तेरे हैं चार भजनमें हैगा एकी। कठिन तपस्याकरी जभी याकी सूरत देखी॥ नेक दरद तो करो कुँवरहै बड़ो बिवेकी। जो मारे प्रह्लाद ना रहै तेरी सेखी६५

जवाब राजाका अपनी बहिन से।

दोहा जा अपने घर बैठरह तोकूँ ना कछु सूझ।
जो कोई सुमिरे रामको मारूँगा बिनबूझ॥

बीबीरी मारूँगा बिनबूझ करूँगा मनकी चाई। नाम दिया मेरा छोंड़ करी मेरी लोग हँसाई॥ बीबीरी जाको लेहै नाम सोई मेरा दुखदाई। यह सुमिरे दिन रात लाज वाको नहिं आई ६६॥

जवाब बहिन का राजा से।

दोहा बालक इनकी बुद्धि है शोच नहीं दिन रात।
ऊँच नीच जाने नहीं तू सुन भैया मेरी बात॥

प्यारेजी सुन भैया मेरी बात कुँवर को तू मतमारै।

शुभकी घड़ी अवतार महलमें लियेतुम्हारे॥भैयारेजा।दिन जन्में कुँवर बजी तेरे नौबत द्वारे। यह तेरा प्रह्लाद बखत में कारज सारे ९७॥ राजा का जवाब बहिन से।

दोहा इकछत मेरा राज है एक तनका परिवार।
जो कोई सुमिरे रामको वाकूँ डारूँ मार॥

बीबीरी वाकूँ डारूँ मार कुँवर को तू समझावै। वाको नाम बिसार हुक्म मेरा जो बजावै॥ हम राजा महराज खड़ा मोसों बाद लगावै। मारूँगा बिनबूझ कुँवर देखा नहिं भावै ९८॥ बूवा समझावै प्रह्लादको॥ राग सो०॥ कुँवर मेरे खैंचो पिताकी दुहाई। अब क्यों मरते बिन आई॥ नाम पिताका मनसे त्यागे हरिकी करत बड़ाई। राज तपे चहुँदेश तुम्हारो सबदेवन भयखाई॥ मात पिता ने जन्म दिया है तिनकी करत बुराई। बरजरही बरजो नहिं मानै कररहे लोग हँसाई॥ भजन भावमें प्रीति लगाई ऐसी कुमति कमाई। लाज कान कुलकी सब खोई तुम हमको दुखदाई॥ शोच समझाय घर बैठ रहोगे वा दूँगी अनन्द बधाई। लक्ष्मण शरण सदा चरणोंकी कर्म लिखा सोइ पाई॥ जवाब प्रह्लाद का बूवा से॥ राग सोहनी॥ हरदम हरिसों प्रीति लगावो यह जग सुपना जानरे। मेरी मेरी करता डोलै ऐसी जगत बेई-मानरे॥ व्हांकी माया व्हांई रहजावे जिनके भरे खजानरे। ऐसा निपट संसार अनारी हरिको नहिं पहिचानरे॥ कंचन काया देह मिलीहै बहुत करै अभि-मानरे। काम क्रोध मद लोभमें छाये ते जगमें बौरानरे॥

क्षण में पार उतर गये सोई जिन्हैं धर्म्मकी बानरे। लक्ष्मण सदा शरण हैं तेरी करते सुमिरण ध्यानरे ॥

वचन बूवा का प्रह्लाद जी से।

दोहा सुनि भैयाकी समझको बोली राजकुमार।
बांहपकड़ पुचकारती किया कुँवर को प्यार॥

प्यारेजी किया कुँवर को प्यार सुनो प्रह्लाद पियारे। तेरी सूरत कुर्बान मेरे नयनों के तारे॥ प्यारेजी राम नाम दे छोड़ बंशके राखनहारे। लेवो पिताकानाम वचनतूमान हमारे ९९ ॥

जवाब प्रह्लाद का बूवा जी से।

दोहा क्या हमको समझावती रामनाम आधार।
निरङ्कार निर्भयरहै जिनकी ज्योति अपार॥

बूवाजी जिनकी ज्योति अपार अर्जमेरी सुनिलीजै। बोले वचन सम्हार सीख ऐसी ना दीजै॥ बूवाजी कौन पिता अरु पुत्र राम का सुमिरण कीजै। अमृत प्याला छोड़ घोलके विष क्यों पीजै १०० ॥

जवाब बूवा जी का भतीजे से।

दोहा कौन दुष्ट पैदा हुए तुम मूरख अज्ञान।
कही सुनी मानै नहीं महामूढ़ नादान॥

प्यारेजी महामूढ़ नादान कही मेरी एक न मानी। कुलमें भये कुपूत सीख तैंने लई बिरानी॥ बेटारे कौन मिला तोहिं दूत पढ़ाई राम कहानी। ऐसी चाहिय नाहिं कहूं मैं सतकी बानी १०१ ॥

दूसरा वचन बूवाजी का भतीजे से।

दोहा बालक तेरी बुद्धि है करै बाप से बाद।
नाहक माराजायगा ना कोई ले फरियाद॥

प्यारेजी ना कोई ले फरियाद पूततेरी शामत आई।

पिता लेगा जब पकड़ तुझे कोई नाहिं छुड़ाई ॥ काटे तेरा शीश खड़ी देखे तेरी माई। तू मेरी कही मान छोड़ दे राम दोहाई १०२॥

जवाब भतीजे का बूवा से।

दोहा पैदा कर पालन करै उनहीं के आधार।
सब जीवजन्तु जाको रटैं उनकी ज्योति अपार॥

बूवाजी उनकी ज्योति अपार कोई दिन दर्शन मेला। पड़ा रहै सब ठाट हंस उड़जाय अकेला॥ बूवारी कितने राजा हुये काल सबके शिर खेला। हाथ पसारे गये साथ ना चलता धेला १०३॥

दूसरा वचन प्रह्लाद का।

दोहा लाखों राजा होगये करके अपना जोर।
हाथ पसारे वे गये जिनके लाख करोर॥

बूवारी जिनके लाख करोर फौज के चढ़े रिसाले। लर्जैथे आकाश खम्भ धरती के हाले॥ बूवाजी इकछत करते राज टरैं ना रणसे टाले। काल बली सब डसे राम रहगये निराले १०४॥

जवाब बूवा का प्रह्लाद जी से।

दोहा राम सुमिरणा छोड़दे जो तू चाहै खैर।
तेरे भलेकी मैं कहूं नाहक बांधै बैर॥

प्यारेजी नाहक बाँधै बैर करे तू जोरावारी। पढ़के पत्थर हुये अक़ल कहँ गई तुम्हारी॥ बेटारे राजघरों के पूतकहीतू मान हमारी।जान जाय क्यों करै कुँवरतू अपनी ख्वारी १०५॥ राजा का वचन जल्लाद से।

दोहा रिसभर के राजा कहै अब ना रहा सवाद।
करकी मुश्क चढ़ाय कै सुन मेरे जल्लाद॥

भैयारे सुन मेरे जल्लाद बात सुन लीजै मेरी। माया मोह दे त्याग करे क्यों इसको देरी॥ भैयारे एक योजन गिरि खड़ा गेर तुम इसको दीजे। अधबिच तजै परान कुँवर की काया छीजै १०६॥

जवाब जल्लाद का प्रह्लाद से।

दोहा मयामोह राखा नहीं त्याग दिये सब नेह।
ले गिरिवर पर चढ़गये थरथर कांपे देह॥

भैयारे थरथर कांपत देह नीर नयनन भरिआये। देखि कुँवरकारूप बहुत मनमें मुरझाये॥ भैयारे बिधना लिखित कुअंक मिटैंगे नाहिं मिटाये। मेरे वशकी नाहिं लिखे कर्म्मन के पाये १०७॥

राजा का वचन जल्लाद से।

दोहा रावकहै ललकार के बैरी है प्रह्लाद।
दे गिरिवर से डार तू सुन मेरे जल्लाद॥

भैयारे सुन मेरे जल्लाद राज मेरा नहिं जाना। ले गिरिवर पर चढ़ो कुँवर ने भय नहिं माना॥ भैयारे फाँसी से बचगया काल अब आया नेरा। जो मारे प्रह्लाद द्रव्यदूंगा बहुतेरा १०८॥

जवाब जल्लाद का राजा से।

दोहा हम तेरे जल्लाद हैं पाये बहुत इनाम।
याद किये सरकार ने आये तेरे काम॥

राजाजी आये तेरे काम कुँवरकी सूरत प्यारी। देखतहैं नर नारि शहर की दुनियासारी॥ ढरे नयनों से नीर भई दिल में लाचारी। तू राजा बेपीर गई तेरी मति मारी १०९॥ वचन प्रह्लाद का जल्लाद से।

दोहा बालक जिनकी बुद्धि है बोले वचन सम्हार।

मेरे पिता के सामने दे गिरिवर से डार॥

भैयारे दे गिरिवर से डार अर्ज मेरी सुनलीजै। मेरे पिताके क़ौल आज पूरे करदीजै॥ भैयारे क्यों ठाढ़े दिलगीर शोच मनमें ना कीजै। मेरे घटमें राम ज्ञान जैसे अमृत पीजै ११०॥

जवाब जल्लाद का हिरण्यकशिपु से।

दोहा वचन सुनत प्रह्लाद के व्याकुल भये शरीर।
कही सुनी मानै नहीं तुम राजा बेपीर॥

प्यारेजी तुम राजा बेपीर कुँवर की साल न जानी। ऐसे भये कठोर कहा जिन एक न मानी॥ प्यारेजी जप तप किये अनेक भये ऐसे अभिमानी। जो मारो प्रह्लाद होय तुम को वैरानी १११॥

राजाहिरण्यकशिपु जल्लाद से कहता है।

दोहा हम राजा के तेज हैं क्या समझावै मोहिं।
देगिरिवर से डारतू नाहिं पहिले मारूं तोहिं॥

भैयारे पहिले मारूं तोहिं खड़ा क्यों बात बनावै। हुक्म दिया मेरा गेर बहुत हमको समझावै॥ भैयारे हिरदैकरो कठोर शोच मन में मतलावै। देगिरिवर से डार कुँवर ढूँढ़ा नहिं पावै ११२॥

वचन जल्लाद का गिरिवर से डालना।

दोहा राजा के सुनि वचन को किया कुँवरपै जोर।
माया मोह राखानहीं ऐसे बने कठोर॥

प्रभुजी ऐसे बने कठोर शोच मनमें जब कीये। यह लड़का परवीण जन्म असुरन घर लीये॥ प्रभुजी यह राजा बेपीर कठिन हैं इनके हीये। दिलमें धीरज बांध डार गिरिवर से दीये ११३॥

महलाद की परमेश्वर ने रक्षाकरी।

दोहा वे हरि दीनदयाल हैं वेद भरे हैं साख।
अपनो जन पहिचानके लिया हाथपर राख॥

प्रभुजी लिया हाथ पै राख ज़रा नहिं देर लगाई। असुर सँहारनहार सदा सन्तन सुखदाई॥ प्रभुजी लख चौरासी रटैं थाह जिनकी नहिं पाई। सब घट रहा विराज कहांलगि करूं बड़ाई ११४॥

राजाजीका वचन सारी सभा से।

दोहा राव कहै मुरझाय के बैरी मारो न जाय।
धड़क धड़क छाती करै नयनन रोष कराय॥

भैयारे नयनन रोषभरि आये राव दो वचन सुनावै। है ऐसा कोई दूत कुँवर को आगे लावै॥ भैयारे मितर ऐसा कौन मेरा सन्देह मिटावै। जो मारे प्रह्लाद तलब घर बैठे पावै ११५॥

दूसरा वचन राजा का सभा से।

दोहा है कोई ऐसा सूरमा पहले करै प्रहार।
दूनी दूंगा नौकरी जो कोई लावे मार॥

प्यारेजी जो कोई लावै मार कुँवर को डाल पछारै। दूँगा बहुत इनाम मेरे सब कारज सारै॥ प्यारेजी कुँवर मारो नहिं जाय यतन मैंने किया घनेरा। इस झगड़ेके बीच काल कहिं आया मेरा ११६॥

राजा हिरण्यकशिपु से वचन बहन का।

दोहा वो बूवा प्रह्लादकी पकड़ कुँवर को हाथं।
खैंच अगाड़ी लेचली सुन भैया मेरी बात॥

प्यारेजी सुन भैया मेरी बात कुँवर को आगे लाई। बोली वचन सम्हार करूं तेरे मनकी चाई॥ प्यारेजी

मोपर शीतल चीर जलूँगी नाहिं जलाई। अगिनि हुताशन करूं कुँवर को यह ठहराई ११७॥

राजा का वाक्य बहन से।

दोहा। चन्दन लिये मँगाय के दिये चाक में डार।
सहन झाड़ मेरे मिटैं अब ना करो अबार॥

बीबीरी अब ना करौ अबार मिटेंगे जीके सांसे। देखेंगे सबलोग शहर के आज तमासे॥ बीबीरी फूले अँग न समाय खिलाजैसा पियबासे। ऐसादिया पिलाय गगन जैसे चन्द्र प्रकासे ११८॥

बुवा भतीजे को लेकर बैठगई।

दोहा मया मोह राखा नहीं गोद लिये प्रह्लाद।
चितालई चुनवाइकै बैठीदिल को साद॥

प्यारेजी बैठी दिलको साध कुँवर को अर्ज लगाई। कंचन बने शरीर आज तेरी शामत आई॥ प्यारेजी बरजो माने नाहिं करी तैंने अपनी चाई। जो तू चाहे खैर पिता की खैंच दुहाई ११९॥

प्रह्लाद का वचन बुवा से।

दोहा होनी तो होके रहै जो कुछ लिखा लिलार।
अनहोनी होती नहीं वेद कहै तरकार॥

बुवारी वेद कहै तत्कार लिखी कर्म्मों की होहै। तीनलोक के नाथ और अब दूजा कोहै॥ बुवारी आदि पुरुष औतार करे वो सोईसोहै। जिनका सुमिरण करूंमेरे क्या सतकोटोहै १२०॥ जवाब माता का।

दोहा लकड़ी जलकोइलाभई कोइलाजलभइराख।
मैंपापिन ऐसीजली कोइला भई न राख॥

कुँवर मेरे किन दूतिन बहकाये ताको रामहि राम

सुहाये॥ यक दिन जन्म लियो मेरे महलों कंचन दान लुटाये। घरघर से बनिता बनिआईं गायेहैं अनँद बधाये॥ बरजरही बरजो नहिंमाने बहुतेरा समझाये। नाम पिताका मनसों त्यागे हरिसों हेतुलगाये॥ घरकी ननँदिया भई मेरी बैरिन लेके अग्निबैठाये। यतनकरूँ कुछ बनि नहिं आवै मरूँ कटारी खाये॥ मान गुमान करोमत कोई अद्भुत ख्याल बनाये। लक्ष्मण शरण सदा हरितेरी कर्म्मलिखा सोई पाये १२१॥

जवाब माता का।

कुँवर प्रह्लाद भगत पहिंचानी तू सुनले कर्म्म कहानी। जादिन तैं उपदेश लियो है मन निश्चय कर जानी॥ हरिको नाम सदा सुखदाई वा बिन बिपत बिरानी। ले प्रह्लाद धरो शूलीपर राजा भये अज्ञानी॥ जब प्रह्लाद लगाईं फांसी ह्वां नहिं शङ्का मानी। धरती ने रखलीनी लाली जगमें रहि नहिं छानी॥ ले प्रह्लाद होलिका बैठी अङ्गमें लागा पानी। लक्ष्मण राम सुमिर गुणगावै यह कुदरतकी बानी १२२॥ जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा वो माता प्रह्लाद की बोली वचन सम्हार।
शुभ घड़ी में पैदा हुये तुम मेरे अवतार॥

बेटारे तुम मेरे अवतार भये प्रह्लाद पियारे। बरजै माने नहीं बहुत तुमसे पचिहारे॥ बेटारे जादिन जन्में कुँवर धरी मैंने नौबत द्वारे। नेक न राखी कान भये तुम हमसे न्यारे १२३॥ जवाब प्रह्लाद का माता से।

दोहा मातासे सुनि वचनको ढरे नयनों से नीर।

हरि बिन मेरा दूसरा कौन बँधावै धीर ॥
माताजी कौन बँधावै धीर हमें हरिनाम पियारे। और सबै हैं ख्याल जगत में धुन्ध पसारे॥ मातारी नेक दर्द ना तोहिं सुनो तुम वचन हमारे। क्यामेरी तक़सीर क्रिये तैंने दिलसे न्यारे १२४॥

वचन प्रह्लाद का माता से।

दोहा जन्मत विष क्यों नादिये हमको हाल मँगाय।
मेरे घट में राम हैं अब क्यों मन पछिताय॥
माताजी अब क्यों मन पछिताय मौत मेरे पास न आवै। चन्दन देहु जराय अग्नि मोहिं नाहिं जरावै॥ माताजी भकसी में करो बन्द मुझे ह्वां मुख दिखलावै। सिंहन में दो डार मुझे ह्वां राम छुड़ावै १२५॥

जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा सुनत वचन प्रह्लाद के ब्याकुल भये शरीर।
सब काया मुरझागई ढरै नयनों से नीर॥
भैयारे ढरै नयनोंसे नीर उमड़के आई छाती। जो मैं जानूँ लाल पहिले मइया मरजाती॥ भैयारे रामनाम दे छोड़ बनूं मैं तेरी साती। तेरा पिता बेपीर नहीं मेरी पार बसाती १२६॥

दोहा चातुर से मूरख बने करै पितासे बाद।
जादिन तू पैदाभया नामधरा प्रह्लाद॥
बेटारे नामधरा प्रह्लाद करो तुम मनकी मानी। इसहठको तू छोड़ कहै मत रामकहानी॥ बेटारे बिन आई क्यों मरै ऐसी क्यों कुबुधिकमाई। तेरे कारण लाल जगतमें हुई रुसवाई १२७॥

जवाब प्रह्लाद का माता से।

दोहा ऐ मैया तू क्यों मरै कहूं वचन समझाय।
सोना जारे काठने क्यों सोना जरजाय॥

माताजी क्यों सोना जरजाय काठको ठोकजरावै। ऐसा हरिका नाम पार जिनका नहिं पावै॥ माताजी अलखरूप ॐकार आप नर देह बनावै। झूठा सब संसार नहक में भरम गँवावै १२८॥

जवाब प्रह्लाद का माता से।

दोहा सुपनेकेसे ख्यालहैं कोई दिन जगमें देख।
वोमेटे मिटती नहीं जो लिखि कर्मकि रेख॥

माताजी जो लिखि कर्म्म कि रेख मिटे कोइ नाहिं मिटावै। पिता होय मोपै कोप कहो फिर कौन बचावै॥ माताजी लेबैठी बुवा पास चिता में अगिन लगावै। हरि बिन कौन सहाय वहां मेरी जान बचावै १२९॥

जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा जादिन तुम पैदा हुये पाला दूध पिलाय।
जो मैं ऐसा जानती देती बिष मिलवाय॥

बेटारे देती बिष मिलवाय पालके किये बड़ेरे। बेटा मेरे चार प्यार तोहिं किये घनेरे॥ बेटारे ऐसे बने कठोर वचन नाहिं मानै मेरे। नेक न राखी कान कठिन है हिरदा तेरे १३०॥

जवाब प्रह्लाद का माता से।

दोहा वे तिरलोकीनाथ हैं जिनकी मोंको आश।
जैसे सीप समुद्र में करै स्वाति की आश॥

माताजी करै स्वाति की आश ऐसा मेरा हरि से नेहा। जिनकी थाह अपार दई मोहिं कंचन देहा॥ मा-

ताजी तू समझावै मोहिं उठे मेरे मन में नेहा। घट में बोले राम लगे मोहिं अधिक सनेहा १३१॥

जवाब प्रह्लाद से माता का।

दोहा राम नाम जाना नहीं करे और की और।
हरिका नाम बिसारके कहीं न दीखे ठौर॥

माताजी ना कहिं दीखैठौर तुम्हें मैं क्या बतलाऊं। जिनके नाम अधार उन्हीं के मैं गुण गाऊं॥ माताजी उस बिन मोहिं न चैन रहै दिन रातरी माई। वा बिन मेरी कौन करैगा आन सहाई १३२॥

जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा तू है सुत मैं मातहूं कहना मेरा मान।
मयामोह क्यों तज दिये नेक न राखी कान॥

बेटारे नेक न राखी कान भये ऐसे निरमोई। कौन मिला तोहिं दूत लाज तैंने कुल की खोई॥ बेटारे बरजरही दिन रात नयन भर भर के रोई। दुखते पाले लाल आज तैंने मात बिछोई १३३॥

जवाब प्रह्लाद का माता से।

दोहा गङ्गनिकट पै जे बसैं ते क्यों पोखर न्हायँ।
मात पिता घर जीवते क्योंवो तीरथ जायँ॥
द्रव्य देखना गर्विये बिपति पड़े ना रोय।
समय बटाऊ आपने लखिलीजे सब कोय॥

माताजी लखिलीजै सब कोय मैंने हिरदय में जानी। राजकरंते गये गई परदे की रानी॥ माताजी क्यों समझावै मोहिं भरे नयनों से पानी। क्या मेरी तकसीर भजे मैंने अन्तरयामी १३४॥ जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा मनहिं सरीखा पावनी मनही की परतीत।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत॥
जादिन तुम पैदा भये हमको पड़ी न सूझ।
जन्मत जहर मँगायके प्यादेती बिन बूझ॥

बेटारे प्यादेती बिनबूझ बहुत जनके पछताई। ना कुछ मेरा दोष कुमत हमसे बनिआई॥ बेटारे नाम धरा प्रह्लाद भये हमको दुखदाई। मरूँ जहर बिषखाय करी मेरी लोग हँसाई १३५॥

जवाब माता से प्रह्लाद का।

दोहा होनी तो होकर रहै अनहोनी नहिं होय।
बिधनाके अक्षरनको मेट न सकता कोय॥

माताजी मेट न सकता कोय कलम करतार बनाई। लाख यतन करलेहु मिटैगी नाहिं मिटाई॥ माताजी क्या तुम को सन्देह मेरे मन ऐसी आई। नहीं किसी को दोष हुई जो हरिने चाई १३६॥

जवाब माता का प्रह्लाद से।

दोहा बच्चे को समझाय लो बैठरहो घर माहिं।
महादुष्ट ऐसे भये मानेगो ये नाहिं॥

बेटारे मानेगो ये नाहिं काल तेरे शिर पै खेले। समझाऊँ दिनरात ग़ज़ब तू ऐसे बोले॥ बेटारे नदी नाव संयोग कोई दिन दर्शन देले। जोड़ो पिताको हाथ भलाई ऐसी लेले १३७॥ जवाब माता से प्रह्लाद का।

दोहा राज देख भूली फिरे कहै और की और।
हरिका नाम बिसारके कहीं न दीखे ठौर॥

माताजी ना कहुँ दीखे ठौर जगत सुपने की माया। इक दिन मरना होय अमर रहती नहिं काया॥ माता

जी हरिके सुमिरे नाम बहुत हमने सुखपाया। तुम घर भोगो राज हमें हरि नाम सुहाया १३८॥

दूसरा जवाब प्रह्लाद का माता से।

दोहा राम नाम सुमिरणकरूँ जबलग घट में प्रान।
कबहूं दीनदयाल के भनक पड़ैगी कान॥

माताजी भनक पड़ेगी कान वचन तू मान हमारे। सब मिलके कहो राम पाप कटजायँ तुम्हारे॥ माताजी वे हरि दीनदयाल जगत को पालेंरी माई। मेरे पिता महराज उन्हीं से करें लड़ाई १३९॥

प्रह्लाद की बुवा कहती है।

दोहा हिरणाकुशकी बहनहीं बोली वचन सुनाय।
नेक दर्द कोई मत करो पावक देहुलगाय॥

भैयारे पावक देहुलगाय खड़ेहो क्यों गमखाये। मूरख है प्रह्लाद समझता ना समझाये॥ भैयारे राजश्वंश ये नाहिं कहीं कुल दाग लगाये। क्या इसकी मति हुई नाम प्रह्लाद कहाये १४०॥ दूसरा जवाब बुवा का।

दोहा सबसे मूरख ये बना ऐसा बने न कोय।
समझाया समझे नहीं बैठे कुल को खोय॥

भैयारे बैठे कुल को खोय राम से ध्यान लगाये। जाका पिता महराज तासे याने बैर लगाये॥ भैयारे देवो चितामें आग तर्स कैसा अब खाये। देखूंगी अब राम आयके इसे छुड़ाये १४१॥

जवाब प्रह्लाद की माता का।

दोहा वो माता प्रह्लाद की भर भर रोवै नैन।
इकदिन जन्मे कुँवर को आजलगे दुखदैन॥

राजाजी आज लगे दुख दैन भयो दुख अगम

अपारा। जादिन जन्मे कुँवर खुशी भई नगर मँझारा॥ राजाजी नेक दर्द ना किया कुँवर को नाहक मारा। बालक है प्रह्लाद तेरा कुछ नाहिं बिगारा १४२॥

जवाब राजा से रानी का।

दोहा ठाट पड़े रहजायँगे अंतसमय जद होय।
सदा अमर कोइ ना रहै इकदिन मरना होय॥

राजाजी इकदिन मरना होय कामतेरे वोही आवै। वा बिन दूजा कौन तुम्हें प्रह्लाद बतावै॥ राजाजी उनहीं का करो ध्यान तेरा सब भरम मिटावै। झूँठा जलधि संसार काहेकूँ गोता खावै १४३॥

राजा का जवाब रानी से।

दोहा अहमक़ तिरिया बावली मतकरो शोच बिचार।
बेटा तेरे चार हैं उनपर नित कर प्यार॥

रानीजी बेटे तेरे चार शोच मनमें ना कीजै। तुमजावो रनवास खड़ी क्यों अङ्गपसीजै॥ रानीजी होगये पूतकुपूत दोष हमको ना दीजै। मेरी सभामें बैठि नाम उसका क्या लीजै १४४॥

जवाब रानी का हिरण्यकशिपु से।

दोहा यहि जीवन धिक्कारहै अबना रहा सवाद।
मरूँ जहर बिषखायके अगिनिहुते प्रह्लाद॥

राजाजी अगिनिहुते प्रह्लाद उठी मेरे तनमें ज्वाला। नेक न राखो मोह मैंने बहु दुखसे पाला॥ राजाजी कंचन जिनकी देह नयन जैसे बने बिशाला। जादिन जन्मे कुँवर दिया क्यों न देश निकाला १४५॥

राजा का वचन रानी से।

दोहा क्योंमरती विषखायके हमसे करके बैर।
चन्दन बिरवा पालिये जड़से काटो कैर॥

रानीजी जड़से काटो केर सींचना विषका क्या है। बैरी है प्रह्लाद जीवना उसकाना है॥ रानीजी कागज़ की कर नाव नहीं कोइ पारलगाई। डूबेगी मँझधार कौन की बाँह गहाई १४६॥

जवाब रानी का राजाजी से।

दोहा आमफलै तौ निवचलै अरण्डफलै इतराय।
अतिकोफूलो सोहनो जड़ामूल से जाय॥
अपनी समझ बिचारकै बगद महलको जाय।
करमरेख मिटती नहीं बैठी मन समझाय॥

प्रभुजी बैठी मन समझाय करमकी रेखा न्यारी। कलम गही कर्त्तार टरैना हमसे टारी॥ प्रभुजी जिनका लेहै नाम लाज उनको है भारी। करिहैं आनि सहाय आप वे कृष्णमुरारी १४७॥

जवाब रानी का परमेश्वर से॥ रागसोहनी॥

दोहा हायकरूँतो जगजले जङ्गलहू जलि जाय।
पापीजिवड़ा ना जले जामें हाय समाय॥

अजी प्रह्लाद शरण है तेरी। तूतो करता जगकी सहाय॥ ऐसा बली त्रैलोकी का राजा ताको बिपत अब गेरी। शेष महेश रटत सनकादिक ऐसे करनेकी टेरी॥ ब्रह्मवेद आगम नित गावैं जिनकी बात बड़ेरी। सुरनर मुनिजन ध्यान धरत हैं हम चरणन की चेरी॥ तू जग में तो में जग दीखे अब सुधिलीजै मेरी। गण गन्धर्ब नारद यशगावैं यह बिनती करहेरी॥ जहँ २ भीड़पड़ी सन्तन पै सबकी विपति निबेरी। लच्छमणशरण सदा चरणों की लीजै खबर सबेरी १४८॥

प्रह्लाद की माताका वचन।

दोहा जिनपै वे किरपाकरैं बिगड़े सुधरैं काम।
सकल सभा सुमिरणकरे मुखसे बोलो राम॥

प्यारेजी मुख से बोलो राम सदा वे करैं सहाई। सन्तन के प्रतिपाल दुष्ट के हैं दुखदाई॥ प्यारेजी जिनके अद्भुत ख्याल लखी माया नहिं जाई॥ लिये अग्नि से राख कहां लौं करूँ बड़ाई १४९॥

होली से बचेहुए प्रह्लाद को माता देखने आई है।

दोहा अगिनिपलटगइ स्वर्गमें बूवा जलिभइछार।
अति अनन्द प्रह्लाद जी राम रटैं निरधार॥

प्रभुजी राम रटैं निरधार अग्नि जरा अङ्ग न आई। जाके नाम अधार सांस जग रहा तिराई॥ प्रभुजी अचरजकीसी बात रानी वहां देखन आई। या चरित्रको देखि सभी दुनियां हुलसाई १५०॥

दोहा सुनत वचन प्रह्लाद के उठी बदन में ज्वाल।
जारे से जरते नहीं नेत्र होगये लाल॥

प्रभुजी नेत्र होगये लाल धरे मनमें जब जोरा। तन में ज्वाला लगी इन्द्र जैसे घनघोरा॥ प्रभुजी पकड़ लिये प्रह्लाद वचन तू सुनले मेरा। दिये खम्भसे बांध कहां अब मितर तेरा १५१॥

जवाब प्रह्लाद का राजा से होता है।

दोहा आदि पुरुष अवतार है सभीदेव परसन्द।
सो मोरी सुधि लेयँगे आन छुड़ावो फन्द॥

दाऊजी आन छुड़ावो फन्द नाम उनका अविनासी। अजामील दिये तार काटदी यमकी फाँसी॥ दाऊजी

तीनलोक के नाथ रटैं जो लख चौरासी। वे मेरी सुधि-लेयँ करो तुम जिनकी हाँसी १५२॥

जवाब पिताका पुत्र से।

दोहा राक्षसकुल अवतार में कहीं पड़ी ना चूक।
लीन्हों खड्ग निकासके मारकरूँ दोटूक॥

बेटारे मार करूँ दो टूक तर्स मोको नहिं आवै। दो के करूँ दो चार जगत में गति नहिं पावै॥ प्रभुजी वा मिन्तर को बोल आयके तोहिं छुड़ावै। कहां गयो तेरा राम बँधा उसके गुणगावै १५३॥

जवाब प्रह्लाद का पिता से।

दोहा मोमें तोमें खड्ग में रहे खम्भ में गाज।
जो मोपै किरपा करै आय सम्हारे काज॥

दाऊजी आय सम्हारे काज लाज उनको है भारी। जिनके नाम अधार शेषने पृथ्वी धारी॥ दाऊजी राक्षस होगये कोटि बड़े योधा बलकारी। रतनागरमें मथे सिंधु जो करदिये खारी १५४॥

जवाब प्रह्लाद का बरुवा।

आज मेरी विपता क्यों न हरे॥ ले प्रह्लाद खम्भ से बांधे हरदम हरिसुमिरे। संकट कठिन विपति है भारी नयनन नीरढरे॥ मेरा पिता जन्म का बैरी मारहिमार करे। सूतखड्ग मेरे शिरपर ठाढ़ मेरा मन देख डरे॥ करजोरे प्रह्लाद पुकारे धीरज क्यों न धरे। आपै हौ प्रभु अन्तरयामी यह दुख क्यों न हरे॥ भक्तन के प्रति-पालक तुम हरि जहँ २ भीड़ परे। लक्ष्मण शरण सदा चरणों की तुमहीं से कामसरे १५५॥

प्रह्लाद का वाक्य प्रभु से।

दोहा वश मेरा नाहीं चले सिंह गाइ लइ घेर।
सभी ठौर रक्षाकरी अबक्यों करते देर॥

प्रभुजी अब क्यों करते देर टेर सुनि करिये फेरा। करी बहुत फ़रियाद राम अब कहां है तेरा॥ दाऊजी भक्तन पर पड़ी भीड़ जहां २ दुःख निबेरा। अबआवे तत्काल रामप्रभु वो है मेरा १५६॥

प्रह्लाद का वाक्य प्रभु से अब खम्भसे प्रकट होते हैं।

दोहा टेरकरी प्रह्लाद ने सुनी जो त्रिभुवन भूप।
भक्तहेत धाये तुरत धरिकर नरसिंह रूप॥

प्रभुजी धरिकर नरसिंहरूप भयानक अतिभयकारी। बड़ेदंत मुखबड़ो नखनकी शोभान्यारी॥ प्रभुजी प्रगटे खम्भमें आय गर्जना कीन्ही भारी। कांपिउठेदिग्पाल कांपिगई पृथ्वीसारी॥ प्रभुजी नहिं सूरज नहिंचन्द न थी रजनी अँधियारी। ना भीतर ना बार भये देहल मंझारी १५७ अब परमेश्वर हिरण्यकशिपुको मारते हैं।

दोहा वे तिरलोकीनाथ हैं दीन्हो रूप दिखाय।
सतदेखा प्रह्लाद का कीन्ही बड़ी सहाय॥

प्रभुजी कीन्ही बड़ी सहाय पकड़ि हिरणाकुशमारा। किया हालबेहाल नखनसे उदर बिदारा॥ प्रभुजी लियाखोल प्रह्लाद बहुत उनको पुचकारा। जनकीकरी सहाय जिन्हों ने नाम अधारा १५८॥

वाक्य प्रह्लाद का।

दोहा हाथ जोड़ प्रह्लाद ने चरणोंशीश नवाय।
अद्भुत तुम्हरो रूपहै शोभा कही न जाय॥

प्रभुजी शोभा कही न जाय भरोसा तेराभारी। वा

दिनसे तोहिंरटौं अग्निराखी मंजारी॥ तुमबिन दूजा कौन रची जिन पृथ्वी सारी। दुष्टनको दलमला भक्त के हौ सुखकारी १५९

लक्ष्मी जी स्तुति करती हैं।

दोहा रूप देखि लक्ष्मी डरी भय मानैं सब देव।
निकट कोई न आसकै करैं दूरसे सेव॥

प्रभुजी करैं दूरिसे सेव निकट कोई नहिं आवै। बड़ा भयानकरूप देखिकै मनघबरावै॥ प्रभुजी लक्ष्मी जोड़ेहाथ दूरसे अरज लगावै। कृपाकरो महराज रूप देखा नहिं जावै १६०॥

परमेश्वर चतुर्भुज रूप धारे हैं।

दोहा लक्ष्मीजी की अर्जसुनि जन प्रह्लाद उबार।
तुरतरूप पलटत भये भुजा दिखाई चार॥

प्रभुजी भुजा दिखाई चार गदा अरु पद्म बिराजै। क्रीट मुकुट शिर छत्र माल बैजंती साजै॥ प्रभुजी शंख चक्र रहेधार श्यामतन अद्भुत सोहैं। पीताम्बर रहेओढ़ देखि सबका मन मोहै १६१॥

प्रह्लाद की विनय प्रभुसे।

दोहा कनककशिपु के उदरको ढूँढ़त हैं सब ठौर।
फेर रूप धरनों पड़े ऐस भक्त हो और॥

प्रभुजी ऐस भक्तहो और विनय प्रह्लाद ने कीनी। करो पिताकी मुक्ति स्वर्ग की आज्ञादीनी॥ पुष्पनवर्षा भई दुंदुभी देवन दीनी। खुशी भये नरनारि सभी मि-लि बिनती कीनी॥ प्रभुजी राजदिये प्रह्लाद तपस्या अच्छी कीनी। लक्ष्मी धर दिये हाथ उन्हों ने अस्तुति कीनी १६२॥

दोहा अस्तुति करके देवता सब गये निज अस्थान।
प्रह्लाद लीला पूरि भइ हरि भये अंतरधान॥

प्रभुजी हरि भये अंतरधान रूप नरसिंह दिखाके। सकल सभा सुन लेउ कहूं मैं लीला गाके॥ प्रभुजी कहैं लक्ष्मण करजोड़ भुजा हरि शीशनवाके। यमकी कटि जाय त्राय बसों बैकुंठै जाके १६३॥

इति श्रीप्रह्लादचरित्रंसम्पूर्णम्॥

अथ बारहमासा कृष्णगोपी का।

मुझेकृष्णबिनानहिंचैन तड़फूंदिनरैन भयेनितझरना। सखिषटऋतु बारहमास पड़ादुखभरना॥ आयाचैतमास नीरासभोगबीलास न उनबिनभावै। बिनकृष्णशोर सब गोपीग्वाल मचावै॥ बनबनमेंभटकतफिरैं धीरनहिं धरैं धूरसबलावै। दिनरैन गोपियां नयननीरबहावै॥ झड़ी॥ बिनकृष्ण कछूनहिं भावै। नहिंमथुरा हमैंसुहावै॥ सौतिनकूबरीजलावै। हुयेकुब्जाकेमनचहे कृष्णदेरहेउसी घरधन्ना॥ सखिषटऋतु बारहमास पड़ादुखभरना १ यह आया मास बैशाख भई मैं राखकृष्णबिन जलके। ले गयामेरेमनको मनमोहनछलके॥ यूंबिलपत गोपी ग्वाल नयनभये लाल दोऊ मलमलके। जैसे तड़फतमीनहीन बिनजलके॥ झड़ी॥ यूं रुदनकरे ब्रजबाला। कितगये नन्दकेलाला॥ सौतिनने यह घर घाला। जिनमोहामुरलीवाला॥ हम किसबिधिधीरजधरें दुःख नितभरें दैवका करना॥स०॥२ यह आया मास अब जेठ हुई नहिंभेंट कृष्णसेअजहूं। बिनकृष्णप्राणसखियोंअपने अबतजहूं॥

होरहा हृदयमें खेद बिरहतनछेद कामसे जलहूं। किसपै सोलहशिंगार अभूषणसजहूं ॥ झड़ी॥ यूं कृष्ण कृष्ण कहें प्यारी। अरु हाहा करें पुकारी ॥ तुम किधर गये बनवारी। काहेसे हमैं बिसारी ॥ यूं रोरोकर ब्रजनार करैं पूकार लई तवशरना ॥ स० ॥ ३ आया अषाढ़ घन घोर इन्द्रचहुँओर घेरके बरसे। बिनकृष्ण अगम समबूंद गिरैंअम्बरसे ॥ झुलसे मेरागात जरायहजात हृदा अन्द-रसे। चपला कि चमक सुलगावे इधर उधरसे ॥ झड़ी मेहबरषे बादरकड़के। बिनकृष्ण कलेजा धड़के॥ आया ब्रजपैइन्दरचढ़के। बर्षने लगा बढ़बढ़के ॥ ब्रजमें पड़रहि सखिभरन भूलगये हिरन घासकाचरना ॥ सखि० ॥ ४ सावनकिदेखकेझड़ी कृष्णबिनकूलें। जिनके पीतमघरब-से हिंडोलेझूलें॥ हमकोतीजनहीं सुहावै कृष्णबिन हाय उठीतनहूलें। कसकतचुरियां करमें जैसे लागत शूलें॥ झड़ी ॥ इनको हम तोड़ बगावैं। आभूषण वस्त्र जला-वैं॥ हमैं दादुर मोर सतावैं। भरभरके घटाडरावैं ॥ मन-मोहन हमको प्रान त्याग नहिं जान ठान हँस भरना॥ सखि०॥ ५ भादों की निशिअँधियारी घटासुनकारी घिर घिरआई। वर्षनलागा चौतरफ़ सखी बौराई ॥ छाजो पानीपड़रहा बाँधझड़रहा अँधेरीछाई। काले पीले बाद-लने झड़ीलगाई ॥ झड़ी ॥ मेहबरषे मूशलधारे ॥ सब सखीपड़ी मनमारे॥ भरेजलसे जंगलसारे। चलेउमँगि नदी अरुनाले ॥ बगुलों की देखकतार घरघर ब्रजनार शीशधुनधरना ॥ सखि० ॥ ६ बिनकृष्ण कामने कीन्ही

आनचढ़ाई। ज्योंज्यों अबवर्षापड़े बिरहतनझुरे कृष्ण बिनमाई॥ बीते पावसनहिं आये कुवँरकन्हाई। घरघर में नोरतेबोवैं नौबरते दुर्गाकेहोवैं॥ हमबिरहिनिनिशि दिनरोवैं। बिनकृष्ण प्राणहमखोवैं॥ पड़ीहमैंऐसीबिपत हमैंनहिंउचित दशहराधरना॥सखि०॥ ७॥ यह आ-याकार्त्तिकमास भईनीरास ग्वालिनीसारी। बिनकृष्ण गोपियां फिरतींलज्जामारी॥ हमैंदीखत अपनीमौत यह करवाचौथ परमदुखभारी। होई नहिं हमसे होय बिना गिरिधारी॥ झड़ी॥ हमैंयमदीवानहिं भावै। हीदीपक मालसुहावै॥ चौसरसे दमघबड़ावै। नहिं चित्त जुवेको चावै॥ विषलागत खीलखिलौनो श्यामसलोने जबसे गयेघरना॥ सखि० ८॥ यह आया मास अब अगहन देखिहियेअगिनिलगी मेरी मैया। जबसेन्यारेहुये हमको छोड़ कन्हैया॥ यह देख देख ऋतुशरद होतीहूं जरद कृष्णबिनमैया। उनबिन क्योंकरहोय पारहमारीनैया॥ झड़ी॥ अबशीतल पवनजलावै। नितशीत कलेजाखावै॥ हमको नहिं सेज सुहावै। तारे गिनते निशिजावै॥ सखिदेखचांदनीरात हमैं परभात कठिनहुइकरना॥ स-खि०॥ ९ यहपूसमास अबआया कांपरहिकाया शीतके मारे। शरदीसेदरदहोरहाबदनमेंसारे॥ मेरी थरथर कांपत देह मुझेसंदेह यह अपरमपारे। बिनकृष्ण शीतानित ह-मपै जुलम गुजारे॥ झड़ी॥ पोहन झड़ीलगाई। पड़रे पाला शीतसखाई॥ चलरही पवनपुरवाई। लगा चिल्ला शरदीखाई॥ सबतरुवर पतझड़भये हमेंदेगये कृष्ण

नितभरना ॥ सखि० ॥ १० ॥ यह आयामास अब माह नहोनिर्बाह यहकबऋतुभावै । बिन कृष्णबसंती क्यों कर वस्त्ररँगावै ॥ हाथों अपनहिना कृष्णबिनहिना कहि कहि नाहींलावें । बिनमोहन किसपरजायबसंतचढ़ावें ॥ झड़ी ॥ बनबन में फूली फुलवारी । खिलरही बसन्त कियारी ॥ होरहेतमाशे भारी । देखतडोलैं नरनारी ॥ सखी देखबसन्ती फूलगई सुधभूल मूल आदरना ॥ सखि० ॥ ११ ॥ यह आया मास अब फाग कि मैं निरभाग पड़ीबिल्लाती । रंग देखदेखजिया उमँगतीछाती ॥ यहपटोलक मृदङ्गराग औररंग जिधरसुनपाती । सुनसुनके भाड़ में निशिदिन भुनभुनजाती ॥ झड़ी ॥ सखिहिलमिल मता उपावैं । योगी स्वाँगबनावें ॥ तनभूषण भस्मरमावें । गले श्रृङ्गीनाद बजावें ॥ यह कुलकी हमारीरस्म जीतेजी खस्म रही कुछ दरना । सखि षटऋतु बारहमास पड़ा दुख भरना ॥ १२ ॥ गोपियोंको प्रेमपहिचान आप भगवान लौंदमें आये । सबहँसहँस गोपी ग्वाल कण्ठ लपटाये ॥ यह देख देख सुरवृंद हुए आनन्द पुष्पबरसाये । मङ्गल में बाजे बजे सकल हुलसाये ॥ झड़ी ॥ कहें गुरूदत्तजीज्ञानी । सुनों लज्जासिंहकी बानी ॥ गावें इशुरीसिंह सैलानी । सुन सुनके भागे दहकानी ॥ कलँगीतुर्रेको तजो कृष्ण नित भजो जो चाहोतरना । सखि षटऋतु बारह मास त्रास हुये भरना ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीबारहमासा कृष्ण गोपियोंका सम्पूर्णम् ॥

---